II Date: / /

विकास के क्षेत्र

विकास के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित है।

1- शारीरिक विकास →

शारीरिक विकास के अन्तर्गत प्राणी के शारीरिक अंगो में होने वाली वृद्धि लम्बाई, भार, शारीरिक गठन, अस्थियाँ मांसपेशियाँ, स्नायुमण्डल तथा आन्तरिक अंगो के विकास का अध्ययन किया जाता है।

2- क्रियात्मक विकास →

क्रियात्मक विकास से तात्पर्य बालक के अन्दर क्रियात्मक क्षमताओं के विकास से है। क्रियात्मक क्षमताओं का विकास बालक के मानसिक विकास को प्रभावित करता है।

किसी भी क्षेत्र में प्रगति के लिये क्रियात्मक विकास परम आवश्यक है।

3> संवेगात्मक विकास →

प्राणी के विकास क्रम में संवेगात्मक विकास बहुत महत्वपूर्ण होता है।

शिशुओं के भीतर संवेगों का उद्भव और विकास कब और कैसे होता है। विद्वानों के लिये यह विवाद का विषय है। किन्तु इतना अवश्य है। कि संवेगों की उत्पत्ति जीवन के साथ ही हो जाती है।

Date: / /

स्वस्थ संवेगात्मक विकास सामाजिक समायोजन में सहायक होता है।

4- सामाजिक विकास →

बालक के भीतर सामाजिक व्यवहारों की उत्पत्ति भी सामाजिक विकास है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। जन्म के बाद जैसी-2 आयु बढ़ती है। उसके समाज का विस्तार भी बढ़ने लगता है।

5- मानसिक विकास →

मानसिक विकास से तात्पर्य बौद्धिक क्षमताओं के विकास से है जिनके आधार पर कोई भी बालक आयु वृद्धि के साथ-साथ अपने नवीन वातावरण की वस्तुओं का बोध प्राप्त करता है। और तदनुसार समायोजन का प्रयास करता है। मानसिक विकास के अन्तर्गत 'प्रत्यक्षों के ~~अन्तर्गत प्रत्यं~~ विकास' का अध्ययन किया जाता है।

हरलॉक के अनुसार →

"हरलॉक ने विकास की परिभाषा इस प्रकार की है"

विकास का नियम परिपक्वता लक्ष्य की ओर समन्वित सुव्यवस्थित प्रकार की प्रगतिशील परिवर्तन श्रृंखला है।

प्रबन्धक
एस मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, वाराणसी